रेशम कीटपालन में रोगाणुनाशक का महत्व

रेशम उद्योग का मुख्य उद्देश्य कोसा उत्पादन है। कोसा उत्पादन की गुणवत्ता एवं मात्रा अनेक घटकों पर निर्भर करती है। इन्ही घटको में एक "रोगाणुनाशक" जिनके द्वारा कीटों के शरीर व कीटपालन शैया का विसंक्रमण करना है। बैक्टीरिया, वाइरस, कवक एवं प्रोटोजोआ द्वारा उत्पन्न होने वाले अनेक रोग रेशमकीट को प्रभावित करते हैं। इसे रेशम कीटपालन के समय उपयुक्त रोगाणुनाशक के द्वारा रोका जा सकता है।

रोगाणुनाशक पाउडर द्वारा रेशम कीटों के शरीर व कीटपालन शैया का विसंक्रमण करने की विधि

लैबेक्स :– लैबेक्स अति प्रभावशाली रोगरोधि रासायन मिश्रण है। इस मिश्रण में 97 भाग बुझे चूने के पाउडर में 3 भाग ब्लीचिंग पाउडर मिला होता है। इस मिश्रण को रेशम कीटों के उपर छिड़काव करने पर प्रोटोजोवा, जीवाणु तथा फफूँदी जनित रोगाणु मर जाते हैं एवं बीमारी का फैलाव नहीं होता है।

लैबेक्स तैयार करने की विधि

1. बाजार से खरीदे चूने पर पानी छिड़क कर रात भर खुला छोड़ दिया जाता है जिससे कि चूने की तीव्रता कम हो जाती है तथा बुझा चूना तैयार हो जाता है। इसका बारीक चूरा बना लिया जाता है।
2. इस चूने के पाउडर को चलनी से छान लेते है। छने चूने के पाउडर एवं ब्लीचिंग पाउडर का मिश्रण 97:3 के अनुपात में तैयार किया जाता है। ऐसे तैयार मिश्रण में एक प्रतिशत क्लोरीन उपलब्ध होती है, जो कि रोगाणुनाशक का काम करती है।
3. ऐसे तैयार मिश्रण को प्लास्टिक की थैली में रखकर उसका मुँह बन्द कर सुरक्षित कर लिया जाता है जिसे 2 महीने तक उपयोग किया जा सकता है।

लैबेक्स के छिड़काव की विधि

1. पतले साफ सुती कपड़े में पाउडर लेकर इसे कीटपालन शैया में कीड़ो के उपर छिड़का जाता है। पाउडर इस प्रकार छिड़कते है कि पाउडर की एक पतली परत बन जायें।
2. लैबेक्स छिड़कने के आधे घण्टे के बाद जाली लगाकर ताजी पत्तियाँ कीड़ो को खाने के लिए दिया जाता है।
3. कीड़ो में बीमारी के लक्षण दिखायी देने पर एक दिन के अन्तराल पर पुनः लैबेक्स चूर्ण का उपयोग किया जाता है।

लैबेक्स का महत्व

लैबेक्स के प्रयोग से कीटपालन के उपरान्त कोकून की वृद्धि संभव है। 100 रो0मु0च0 के कीटपालन के लिए 3–4 किलोग्राम लैबेक्स की आवश्यकता पड़ती है। लैबेक्स के प्रयोग के उपरान्त 100 रो0मु0च0 के कोसोत्पादन में 2 से 3 किलोग्राम की वृद्धि संभव है।

विजेता

1. वेट केयर विजेता एक प्रभावकारी रोग रोधी डिसइनफेक्टेंट है। यह रेशम कीट को मसकार्डिन, ग्रासरी, फ्लेचरी तथा पेब्रिन जैसे – रोगों के संक्रमण से बचाने की क्षमता रखता है।

1. वेट केयर विजेता एक प्रभावकारी रोग रोधी डिसइनफेक्टेंट है। यह रेशम कीट को मसकार्डिन, ग्रासरी, फ्लेचरी तथा पेब्रिन जैसे – रोगों के संक्रमण से बचाने की क्षमता रखता है।

विजेता प्रयोग करने की विधि

वेट केयर विजेता एक पतले सूती कपड़े में लेना चाहिए तथा रेशम कीट के पूरे शरीर एवं बिस्तर पर नियमित रूप से छिड़काव करना चाहिए। खाना देने की प्रक्रिया छिड़काव के 30 मिनट बाद शुरू करनी चाहिए। विजेता पाउडर की मात्रा रेशमकीट के अवस्था अनुसार देना चाहिए जो कि कीटों की अवस्था अनुसार निम्नवत् है।

सावधानियाँ

1. मोल्टींग प्रक्रिया के दौरान पाउडर का छिड़काव नहीं करना चाहिए।
2. विजेता पाउडर के पैकेट को कसकर बाँध कर रखना चाहिए।
3. पाउडर बच्चो की पहुँच से दुर रखना चाहिए।

रेशम कीट की अवस्था	मात्रा (ग्राम) (100 रो०मु०च० के लिए)
पहले मोल्ट के बाद तथा खाना शुरू करने के पहले	50
दुसरे मोल्ट के बाद तथा खाना शुरू करने के पहले	100
तीसरे मोल्ट के बाद तथा खाना शुरू करने के पहले	550–600
चौथे मोल्ट के बाद तथा खाना शुरू करने के पहले	800–1,250
पाँचवे इन्सटार में चौथे दिन सफाई के बाद	1,500–2,000
कुल मात्रा (100 रो०मु०च० के लिए)	3,000-4,000

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें

क्षेत्रीय रेशम अनुसंधान एवं उत्पादन केन्द्र, नगड़ी, राँची

एवं

अनुसंधान प्रसार केन्द्र, गुमला

वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार

Rameshwaram Printers (9334450199)

केन्द्रीय रेशम बोर्ड, भारत • CENTRAL SILK BOARD, INDIA •

रेशम कीटपालन में रोगाणुनाशक का महत्व

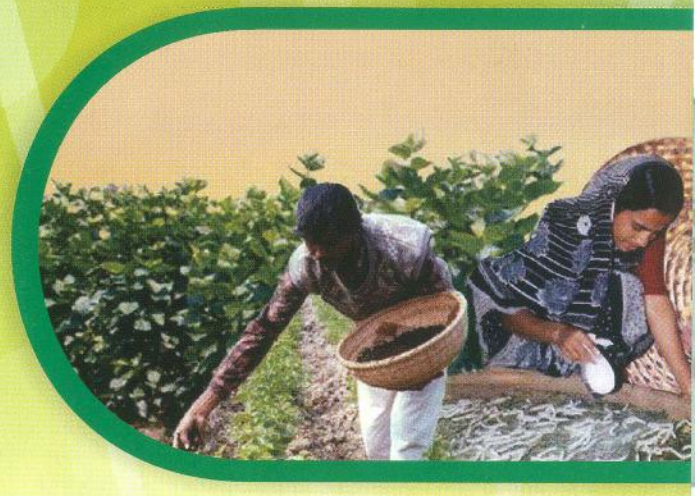

सम्पादन

डा० मो० मजहर आलम, वैज्ञानिक - सी
क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केन्द्र, नगड़ी, रांची

डा० घनश्याम सिंह, वैज्ञानिक - डी
अनुसंधान प्रसार उपकेन्द्र, भण्डरा, लोहरदगा

डा० राम कुमार, वैज्ञानिक - सी
अनुसंधान प्रसार केन्द्र, गुमला